शोधार्थी : तबस्सुम जहां
शोध-निर्देशक : डॉ ए आर. मुसव्विर
विभाग : हिन्दी
विषय : मंजुल भगत के कथा साहित्य में चित्रित स्त्री जीवन की विसंगतियों का अध्ययन

शोध-सार

बीज शब्द : विसंगति, स्त्री जीवन, परिवार, समाज, आर्थिक स्थिति

भारतीय हो अथवा पाश्चात्य जगत बहुत हद तक स्त्री के जीवन की विसंगतियां समान रही हैं। वर्गीय दृष्टि से भी माने तो चाहे स्त्री किसी भी वर्ग की हो कहीं न कही उसका शोषण हुआ है फिर चाहे वे मानसिक स्तर पर हो या दैहिक स्तर पर। अलग-अलग धर्म से संबधित होने पर भी उनकी समस्याएं एक समान है अंतर है तो केवल शोषण के होने वाले रूपों का। स्थिति यह है कि स्त्री में आर्थिक पराधीनता की स्थिति आज भी बनी हुई है। इसके अतिरिक्त स्त्रियों के अर्थोपार्जन करने से पति-पत्नी के संबंधों में नवीन समस्याओं व विसंगतियों ने जन्म लिया है। कालांतर में एक स्त्री के पत्नी रूप में उसके दांपत्य जीवन में यौन संबंधों से उत्पन्न तनाव, कुंठा, द्वंद्व, आक्रोश, तलाक आदि की समस्या विद्यमान हैं और इस समय तक स्त्री के अन्य रूप जैसे विधवा, प्रेमिका, वेश्या आदि पर भी आधुनिक जीवन का प्रभाव पड़ने से उसमें और भी अधिक जटिलतायें आ गई हैं। आज बदलते हुए समाज में स्त्री पति की अनुगामिनी बनने की बजाए सहभागिनी बनना अधिक उचित समझती है। वह परंपराओं व मूल्यों का पालन तो करना चाहती है साथ ही प्रगति के क्षेत्र में पति के कंधे से कंधा मिला कर खड़ा होना चाहती है। मंजुल भगत के लगभग सभी स्त्री पात्र पारंपरिक आदर्श भारतीय मूल्यों का पोषण करते हैं साथ ही पति के लिए घर की चारदीवारी लांघ कर संघर्ष भी करते हैं।

भारतीय संस्कारों के कारण ही अनेक विसंगतियों में जीते उनके पात्र पारिवारिक सत्ता को हर हाल में बनाए रखते हैं। मंजुल भगत के नारी पात्र चाहे वह उपन्यास में हो एवं कथाओं में, अपने घर को बनाए रखने के लिए नपुंसक पति से भी तलाक लेने को तैयार नहीं होते हैं। पुरुष सत्ता से दबी-कुचली ये स्त्रियाँ अनेक त्रासदी और विडंबनाओं में जीते हुए भी अपने लिए अस्तित्व और मुक्ति का रास्ता खोजती हैं परन्तु पुराने रास्ते का अंग-भंग नहीं करती हैं। उनका पुरुष एवं पति की सत्ता से मोह भंग अवश्य होता है, लेकिन उससे विद्रोह करके तथा सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट करके वे अकेली रास्ते पर नहीं बढ़ना चाहती हैं।

मंजुल भगत के नारी पात्र सबल हैं, परंतु फिर भी नारी के परंपरागत तथा प्राकृतिक संस्कारों एवं दायित्वों से वे भागती नहीं हैं। मंजुल भगत के स्त्री पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये पात्र विसंगति में जीते हुए भी किसी भी प्रकार के अपराध-बोध और कुण्ठा से मुक्त हैं। नारी के साथ अपराध-बोध का जो मिथक बना हुआ था, वह इन नारी पात्रों में नहीं मिलता है। नारी की यह मुक्ति मंजुल भगत के लेखन की एक सबसे बड़ी उपलब्धि है।

मंजुल भगत के कथा साहित्य के स्त्री पात्र विविध प्रकार हैं। ये स्त्री पात्र कभी जीवन में परंपरावादी रूप में त्याग और समर्पण की मूर्ति बनकर उजागर होते हैं तो कभी आधुनिक रूप से स्वछंद शैली अपनाते है। कभी स्वतंत्र चेता बनकर परंपराओं और रूढ़ियों से टक्कर लेते हैं। कभी आत्मनिर्भर बनकर जीवंतपर्यंत जीवन तथा परिस्थितियों से जूझते हैं। कुछ स्त्री पात्र जो अपने जीवन में संघर्ष नहीं कर पाते वे अनेक समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं कुछ ऐसे भी स्त्री पात्र हैं जो परिवार तथा समाज में न केवल अवैध संबंधों का दंश झेलते हं बल्कि परिवार में उपेक्षा का शिकार भी होते हैं और अपनों के बीच रहते हुए भी निरर्थक-सा जीवन जीते रहते हैं।

स्त्री ही एक परिवार की धुरी होती है। स्त्री के बिना परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती परंतु विसंगति यह है कि जिस स्त्री को परिवार के केन्द्र में होना चाहिए वह सदा से ही हाशिए पर रही है। इसका प्रमुख कारण यह है कि परिवार की आर्थिक व्यवस्था सदा से ही पुरुषों के हाथ में रही है अत: पुरुष ने स्वयं को घर के मुखिया का दर्जा दिया है। आर्थिक उपार्जन के कारण ही पुरुष स्वयं को शासक और स्त्री को दासी मानता आया है और यही कारण है कि स्त्री को आजीवन पुरुषों के अनेक अत्याचार सहन करने पड़ते हैं।

कालांतर में औद्यागिकीकरण व बाज़ारवाद के बाद आए बदलते सामाजिक मूल्यों का प्रभाव अनेक प्रकार से परिवार पर भी दृष्टिगोचर होने लगा। वस्तुत: उस समय पारिवारिक रिश्तों में आए अलगाव, टूटन, कलह का सीधा प्रभाव स्त्री के जीवन में भी व्यापक रूप से होने लगे। कालांतर में स्त्री भी घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर आत्मनिर्भर बनने लगी। शिक्षा के फलस्वरूप स्त्री भी कामकाजी बनकर परिवार में पुरुषों के समान आर्थिक रूप से अपना योगदान देन लगी। अब उसका कार्यस्थल घर और बाहर दोनों बंट गया है। घर और कार्यास्थल के बीच सामंजस्य स्थापित करने में स्त्री को अनेक विसंगतियों का सामना करना पड़ता है। मंजुल भगत ने अपने कथा साहित्य में हर प्रकार की पारिवारिक सामाजिक और आर्थिक विडंबनाओं से घिरो स्त्रियों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।